राज कामिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 791

चुड़ैल माँ

भोकाल

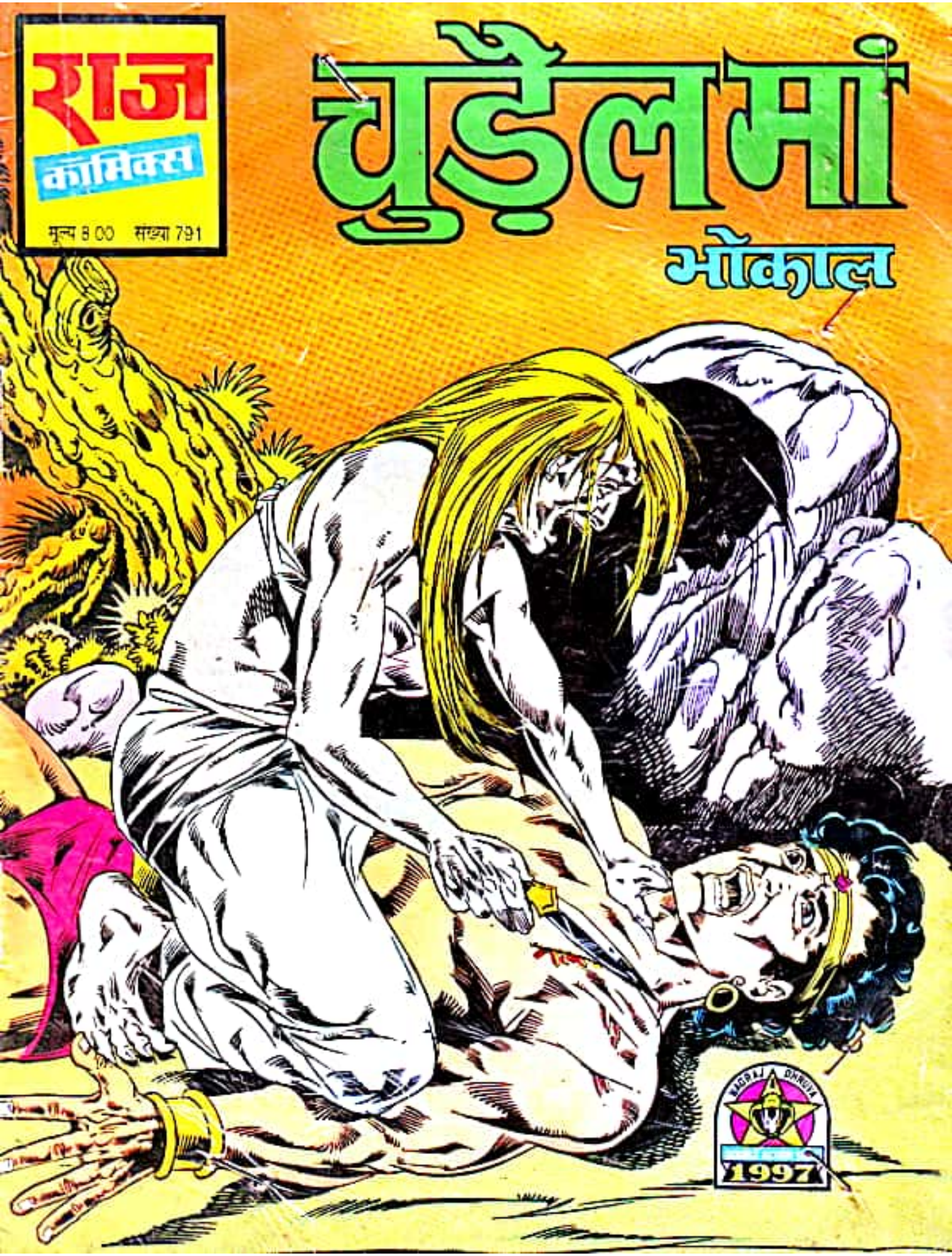

RAJ COMICS

1997

प्रलिस्क के विनाश के बाद राजकुमार आलेप महागुरु भोकाल की शक्तियों के साथ अपनी माँ की खोज में निकल पड़ा तो वहीं का होकर रह गया और कहलाया मानवता और न्याय का रक्षक...

...महामानवी लोकगाथा

चुड़ैल माँ

भोकाल सीरीज

- लेखक: संजय गुप्ता.
- सम्पादन: मनीष गुप्ता.
- चित्रांकन: क्रदन स्टूडियो.

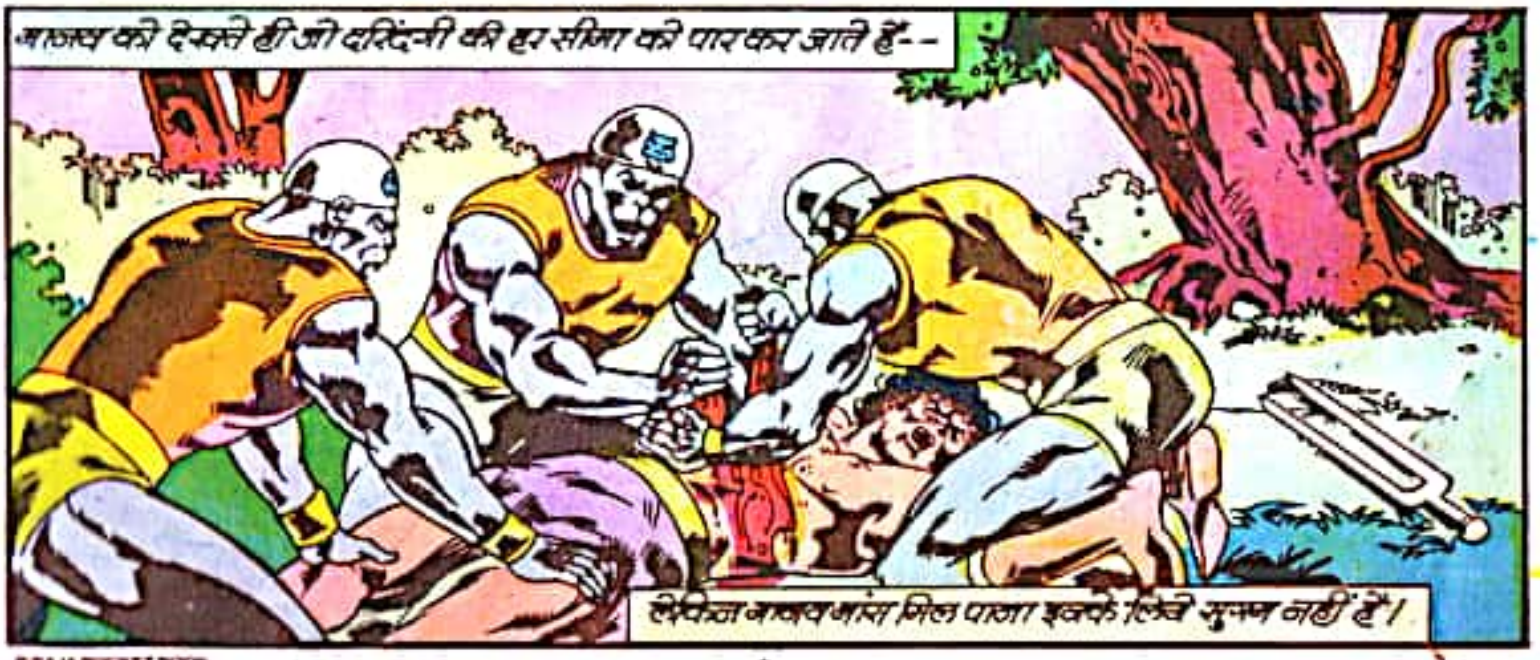

© RAJA POCKET BOOK

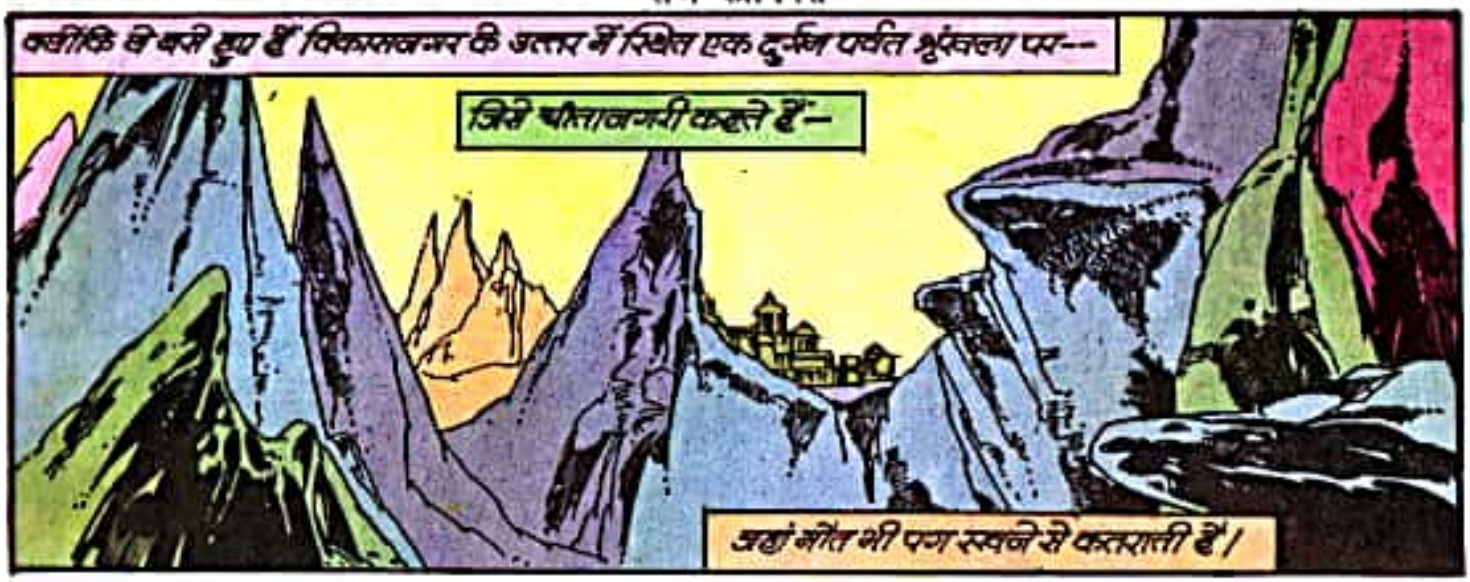
क्योंकि वे बसे हुए हैं विक्रमनगर के उत्तर में स्थित एक दुर्गम पर्वत श्रृंखला पर--
जिसे चीतानगरी कहते हैं--
जहां मौत भी पग रखने से कतराती है।

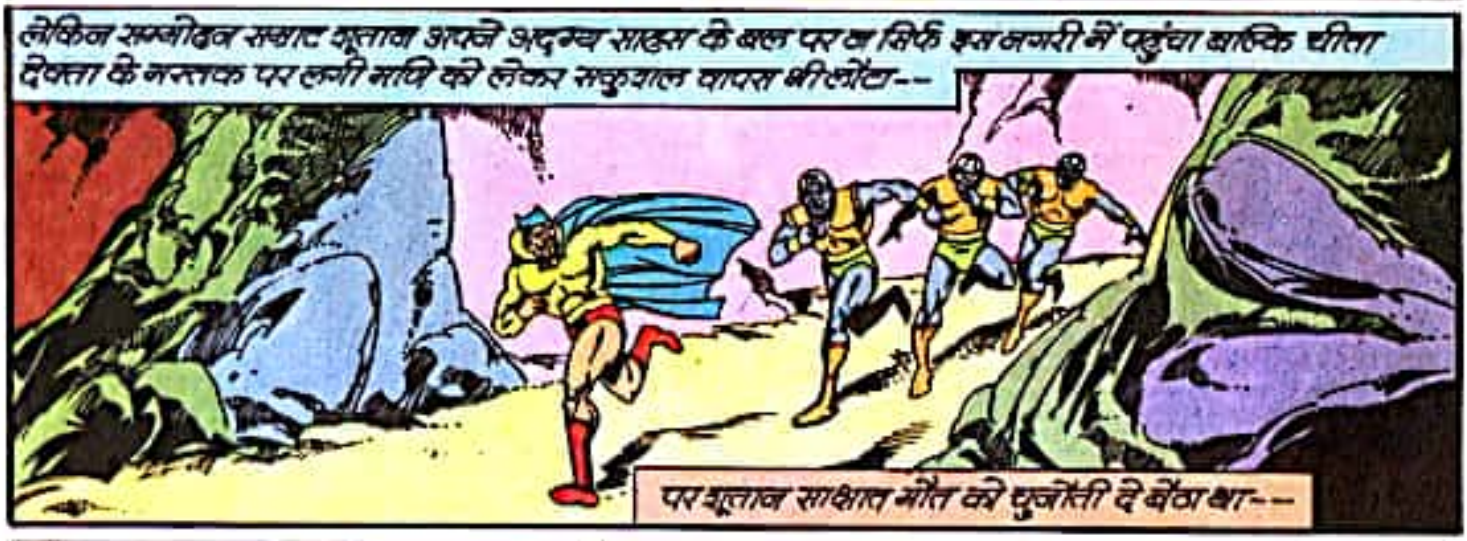
लेकिन सम्मोहन सम्राट शूतान अपने अदम्य साहस के बल पर न सिर्फ इस नगरी में पहुंचा बल्कि चीता देवता के मस्तक पर लगी मणि को लेकर सकुशल वापस भी लौटा--
पर शूतान साक्षात मौत को चुनौती दे बैठा था--

मौत का दूत बनकर प्रत्येक चीतामानव शूतान की खोज में निकल पड़ा
चीता एकमात्र अपवाद था शूतान की मौत--

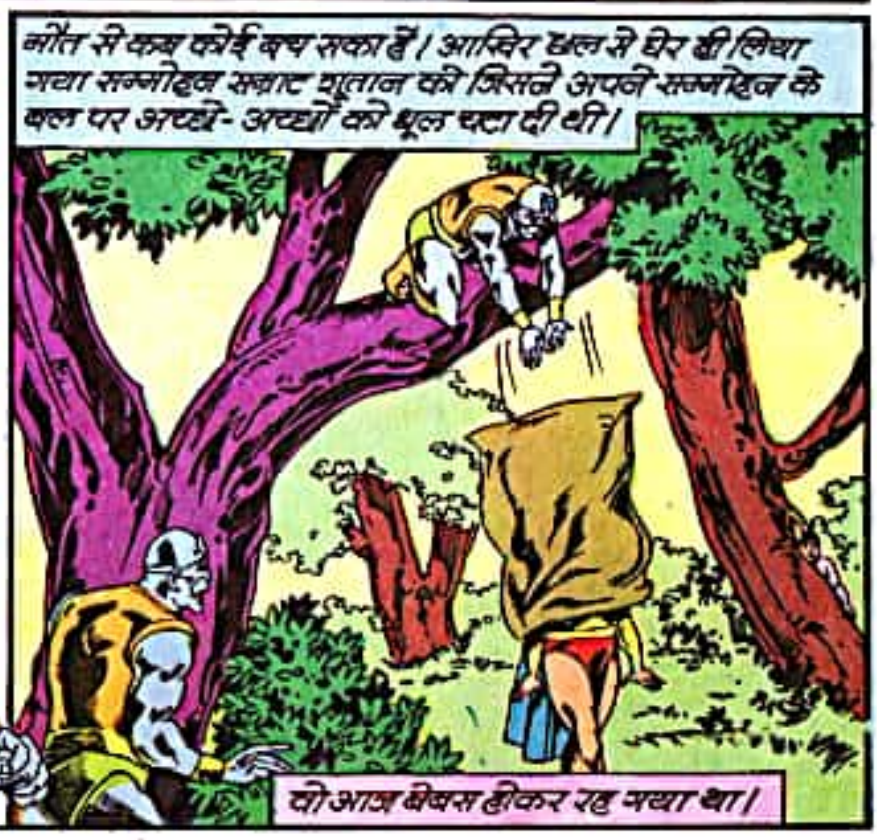
मौत से कब कोई बच सका है। आखिर छल से घेर ही लिया गया सम्मोहक सम्राट शूतान को जिसने अपने सम्मोहन के बल पर अच्छों-अच्छों को धूल चटा दी थी।
वो आज बेबस होकर रह गया था।

गूलान के मुख से दर्दनाक चीखों के साथ निकल रहा था एक ही नाम--

भोकालऽऽऽ

गूलान की चीखों से थर्रा उठा था पूरा जंगल और वो प्रत्यक्षदर्शी जंगलवासी।

जिसकी थरथराहट भोकाल तक पहुंच उसे सब कुछ बता देने के उपरान्त ही कम हुई--

नहीं। गूलान को कुछ नहीं हो सकता।

मित्र पर संकट की सूचना पाकर फट पड़ने के लिए मचलने लगा महाबली भोकाल के क्रोध का ज्वालामुखी--

फिर कैसे न उठाता वो हे सौम्यंध-

अब तक में इस पृथ्वी के मानचित्र से वीतानगरी का नामों निशान नहीं मिटा दूंगा चैन से नहीं बैठूंगा।

प्रतिशोध की आग्नि में झुलसता भोकाल प्रलय दूत बनकर वीतामानवों पर टूट पड़ा-

वीतानगरी में प्रलय आ ही गई होती...

...यदि वीता मंदिर में उसे दिखाई न दिया होता...

गूलान!

मित्र को जीवित देख उसकी अभिरक्षा के लिए जी जान से जुट गया भोकाल-

पर शायद उस महाबली से महाकाल ज्यादा शक्तिशाली था--

मित्र की बाहों में ही दम तोड़ दिया एक मित्र ने...

...आकाश में विचरती उस आकृति की तरफ इशारा करते हुए—

जो थी भोकाल को प्रहारा देने आई तुरीन की आत्मा!

वीरता का इतिहास रचकर दोनों सद्ध आत्माएं अनन्त आकाश में विलीन होती चली गईं।

पीछे रह गया भोकाल जो तुरीन व शूलान की आत्माओं के पीछे पागलों की तरह भागता जा रहा था।

तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकते! रुक जाओ तुरीन! रुक जाओ शूलान!

रुक जाओ!

सैकड़ों हाथ, गहरी खाई भी उसके कदमों को न रोक सकी।

अपने दुख की गहराई को साथ लिये उस गहरी खाई में गिरता चला गया भोकाल—

रुक जाओऽऽ

आहऽऽ

इसी के साथ भोकाल का मस्तिष्क अचेतना के अंधेरे संसार की सीमाओं को पार करके चेतना की रोशनी भरी दुनिया में आ पहुंचा—

या... ये मैं इस कुटिया में कैसे आ पहुंचा? कौन लाया मुझे यहां?

अपने प्रश्नों का उत्तर तलाश करने के लिए भोकाल ने उठना चाहा—

लेकिन वह सफल नहीं हो पाया—

अहह!

मेरे शरीर का एक-एक अंग पके फोड़े की भांति दुख रहा है...

...मैं हिल भी नहीं पा रहा हूं।

तुम्हें हिलने की आवश्यकता भी नहीं है...

क्योंकि तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए मैं यहीं आ गई हूं।

एक तरफ से गूंजी वह अत्यंत मीठी आवाज—

उसे देखकर अोकाल के शरीर में भी सिहरन दौड़ गई--
ओह! इतने कुरूप चेहरे वाली यह वृद्धा कौन है?
जंगल में स्थित यह कुटिया मेरी है...

मैंने तुम्हें अचेत और बुरी तरह घायल पड़े देखा तो...
...मैं तुम्हें यहां उठा लाई। पांच दिन बाद आज तुम्हारी चेतना वापस लौटी है।
आप हैं कौन? और इस भयानक जंगल में क्यों रहती हैं?

उत्तर में बुढ़िया के अधरों पर मुस्कान खेल गई--
मां को परिचय देने की आवश्यकता नहीं होती पुत्र! तुम मुझे मां कह सकते हो!
और इस वन में रहकर मैं क्या कर रही हूं। यह समय आने पर तुम्हें स्वयं ही पता चल जायेगा।
मां!
बुढ़िया के अज्जाने में ही अोकाल के अंतर्मन को आन्दोलित कर दिया था। उसने अोकाल को मां बाज का वह शब्द याद दिला दिया था जिसे वह वर्षों से भूला हुआ था--

तुम्हारे वस्त्रों से यह कुछ सामान निकला है। इसे रखो...
...मैं अभी तुम्हारे लिए शक्ति-दायक काढ़ा लेकर आती हूं!
फिर बुढ़िया कुटिया से बाहर निकल गई, वे दो चीजें अोकाल को सौंपकर...

...जिनमें बसी थी अोकाल की यादें-
परी मां का यह पंख और तूणीर का यह प्रहारा, मां और पत्नी की अन्तिम निशानी के रूप में मेरे पास रह गए हैं!...

...दोनों ही जीवन के इस भंवर में मुझे अकेला छोड़कर जा चुकी हैं।
टूट गया उस महाबली के सब्र का बांध। फूट-फूट कर रो पड़ा वह--

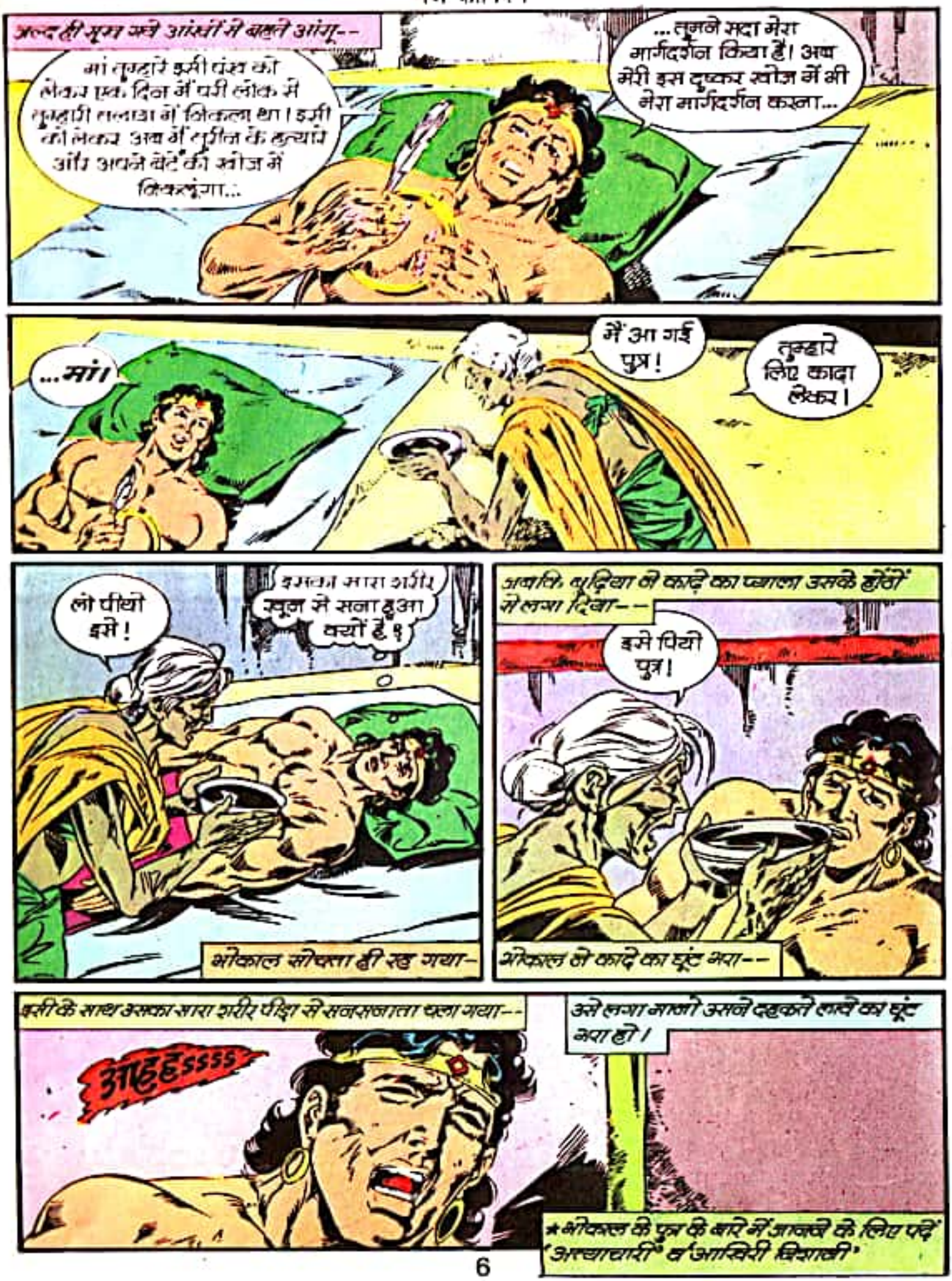
अन्ततः बूढ़ी मां के आंसुओं में बहते आंसू--
मां तुम्हारे इसी वंश को लेकर एक दिन मैं परी लोक में तुम्हारी तलाश में निकला था। इसी को लेकर अब मैं दुर्गति के हत्यारे और अपने बेटे की खोज में निकलूंगा...
...तुमने सदा मेरा मार्गदर्शन किया है। अब मेरी इस दुष्कर खोज में भी मेरा मार्गदर्शन करना...
...मां!
मैं आ गई पुत्र!
तुम्हारे लिए काढ़ा लेकर।
लो पीयो इसे!
इसका सारा शरीर सूजन से सना हुआ क्यों है?
भोकाल सोचता ही रह गया-
अचानक बूढ़िया के काढ़े का प्याला उसके होंठों से लगा दिखा--
इसे पियो पुत्र!
भोकाल को काढ़े का घूंट भरा--
इसी के साथ उसका सारा शरीर पीड़ा से सनसनाता चला गया--
आहहsssss
उसे लगा मानो उसने दहकते लावे का घूंट भरा हो।
★भोकाल के पुत्र के बारे में जानने के लिए पढ़ें 'अत्याचारी' व 'आखिरी दिशाएं'

असहनीय पीड़ा से तड़पते हुए भोकाल ने अपना मुंह प्याले से हटा लिया--
ये आप मुझे क्या पिला रही हैं? हटाइये मैं इसे नहीं पी सकता।
ऐसा नहीं बोलते। अगर तुम इसे नहीं पियोगे तो ठीक कैसे होगे?
तुम्हारे दुर्बल शरीर में नई शक्ति का संचार होगा इसे पीने से।
परन्तु
कोई परन्तु-वरन्तु नहीं। अगर मां का तनिक भी सम्मान तुम्हारे दिल में है तो तुम इसे पीने से इंकार नहीं करोगे!
कहते हुए बुढ़िया ने प्याला एक बार फिर भोकाल के मुंह से लगा दिया-
आप इंकार करने का सामर्थ्य कहां था भोकाल में-
उफ! मां शब्द के सम्मान के लिए तो विष भी पी जाने को तैयार हूं मैं। फिर यह काढ़ा क्या चीज है।...
...लेकिन यह काढ़ा मेरे शरीर में जाकर ना जाने क्या प्रभाव डालेगा?
अप्रत्याशित था उस काढ़े का प्रभाव--
ओफ्फ! मेरा मस्तिष्क सांय-सांय कर रहा है।
भूचाल सा आ गया है मेरे शरीर में और...
...सारे शरीर विशेषकर पीठ में एक बार फिर भीषण पीड़ा होने लगी है... आहह
जैसे-जैसे जल बिन मछली की भांति तड़पते भोकाल की पीड़ा बढ़ती जा रही थी...

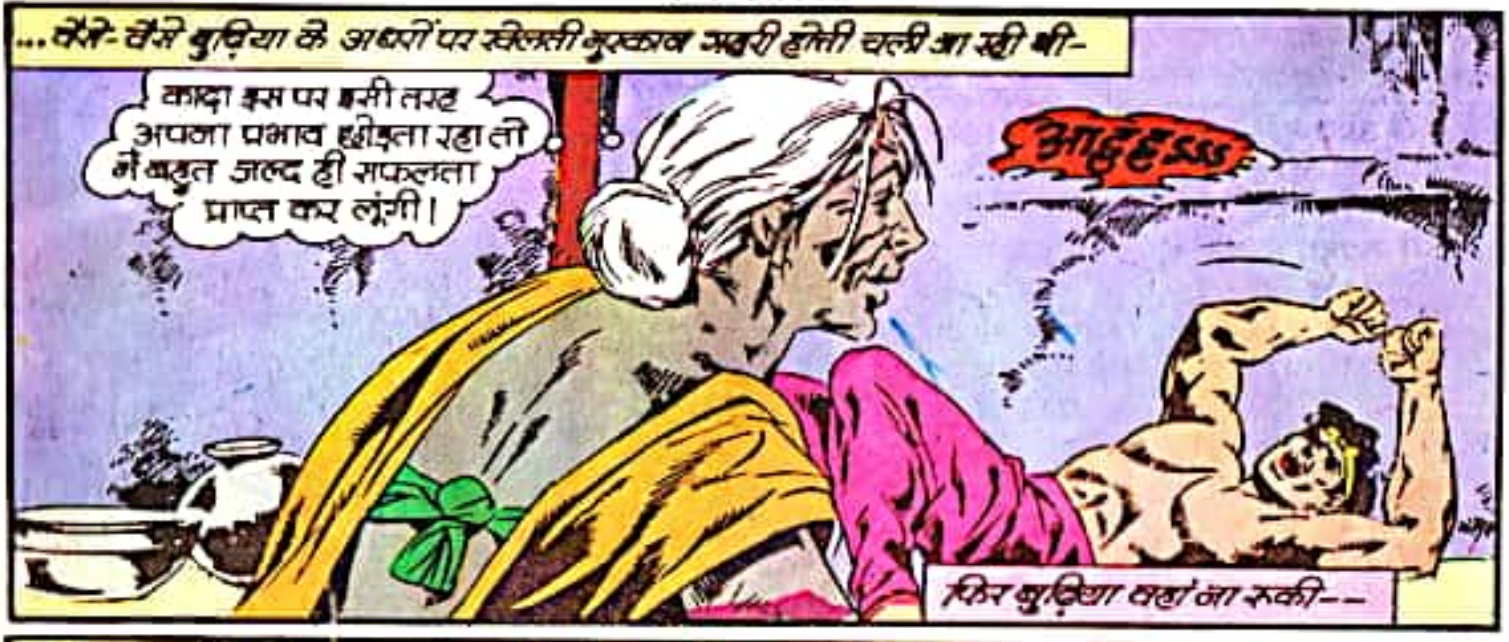
...वैसे-वैसे बुढ़िया के अधरों पर खेलती मुस्कान गहरी होती चली जा रही थी-
काढ़ा इस पर इसी तरह अपना प्रभाव छोड़ता रहा तो मैं बहुत जल्द ही सफलता प्राप्त कर लूंगी।
आह हह sss
फिर बुढ़िया वहां ना रुकी--

बुढ़िया के कुटिया से बाहर जाने के कुछ देर बाद अोकाल को पीड़ा से मुक्ति मिली--
ओफ्फ् अंतत: भयंकर पीड़ा से छुटकारा मिल ही गया।...
...एक बार तो लगता था कि पीड़ा मेरे प्राण लेकर ही रहेगी!

ओह यह सब हुआ उस काढ़े के कारण जो वृद्धा ने मुझे पिलाया!
मुझे वह काढ़ा पिलाकर अपना कौन सा मकसद हल करना चाहती है वह?
तभी कुटिया के दरवाजे की तरफ से आई आवाज की तरफ घूम गईं अोकाल की आंखें...

...और आश्चर्य की अधिकता से फैलती चली गईं--
क्योंकि उन आंखों को दिखाई दे रही थी वह बुढ़िया...

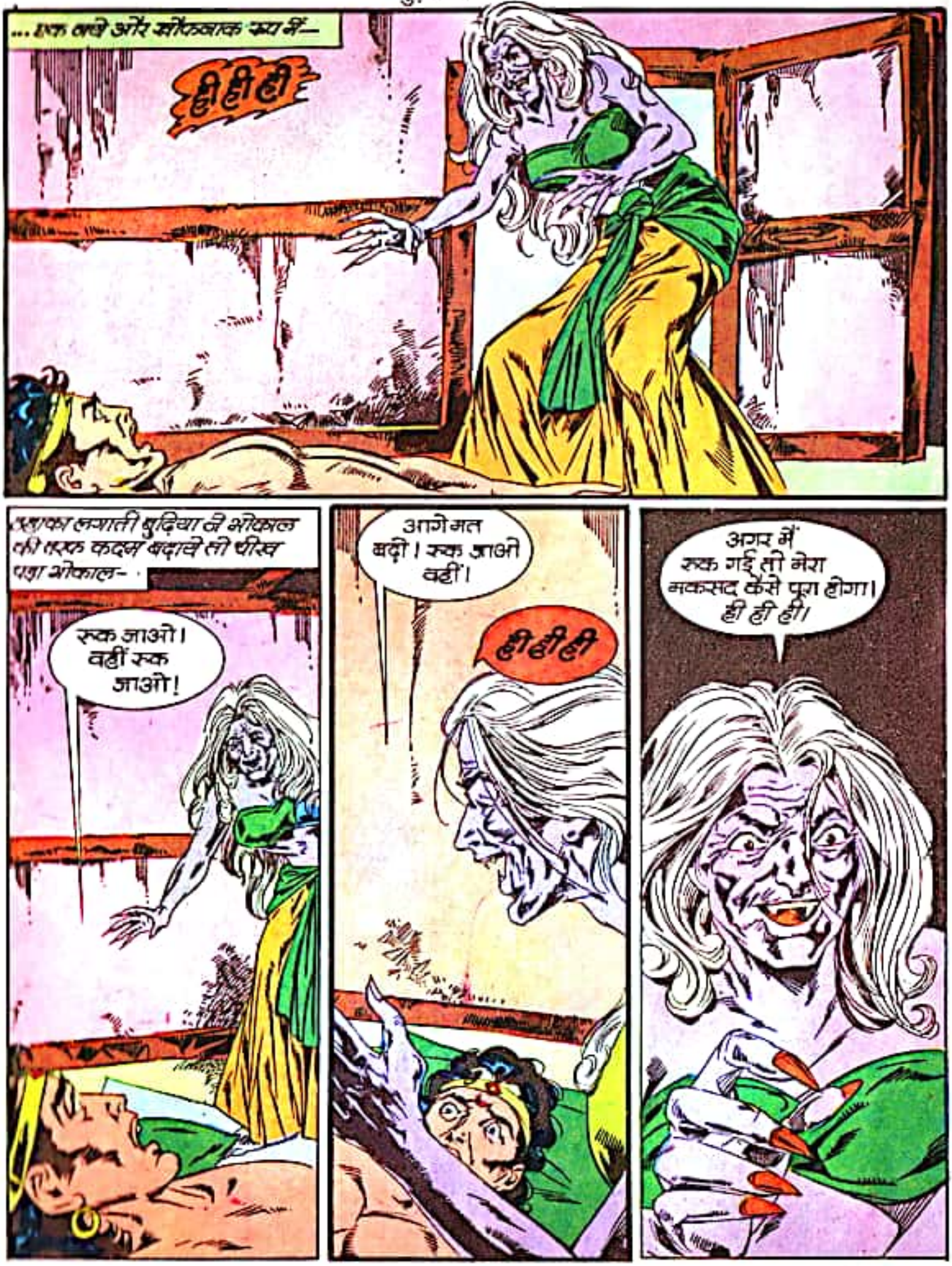
... इस वक्त और भौंकवाक्त क्या में—
ही ही ही
सड़क लगाती बुढ़िया के भोकाल की सड़क कदम बढ़ावे तो पीस पड़ा भोकाल—
रुक जाओ। वहीं रुक जाओ!
आगे मत बढ़ो। रुक जाओ वहीं।
ही ही ही
अगर मैं रुक गई तो मेरा मकसद कैसे पूरा होगा। ही ही ही।

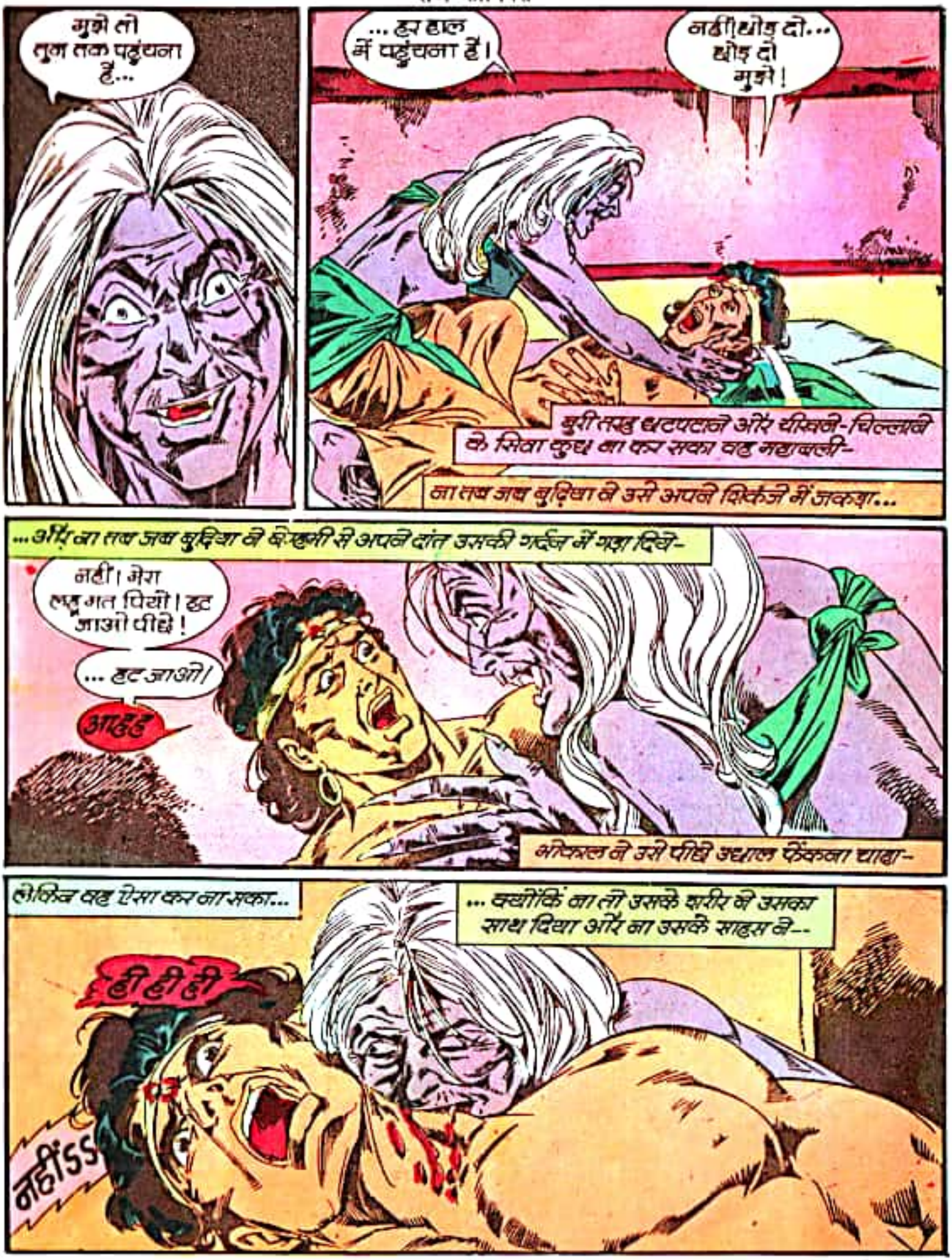
मुझे तो तुम तक पहुंचना है...
... हर हाल में पहुंचना है।
नहीं! छोड़ दो... छोड़ दो मुझे!
बुरी तरह छटपटाने और चीखने-चिल्लाने के सिवा कुछ ना कर सका वह महाबली-
ना तब जब बुढ़िया ने उसे अपने शिकंजे में जकड़ा...
... और ना तब जब बुढ़िया ने बेरहमी से अपने दांत उसकी गर्दन में गड़ा दिये-
नहीं। मेरा स्पर्श मत पियो। हट जाओ पीछे!
... हट जाओ!
आहह
मोक्षल ने उसे पीछे धकेल फेंकना चाहा-
लेकिन वह ऐसा कर ना सका...
... क्योंकि ना तो उसके शरीर ने उसका साथ दिया और ना उसके साहस ने--
ही ही ही
नहींSS

कुछ ही पलों बाद भीकाल के कंठ से निकलती चीखें मद्धम पड़ती चली गईं-

और चेतना पर हावी होता चला गया घना अंधकार-

सुबह के सूरज की किरणों ने वातावरण के साथ-साथ भीकाल के मस्तिष्क पर छाये अंधेरे को भी दूर किया-

शुभ प्रभात पुत्र! आशा है स्वयं को पहले से अच्छा अनुभव कर रहे होगे तुम!

...उस पर ममता उड़ेलती बोली वह बुढ़िया--

पुत्र होकर मां की बात टालता है! खा इसे चुपचाप! नहीं तो अभी एक चपत लगाऊंगी तुझे!

अवाक था भीकाल! हैरानी उस पर बुरी तरह हॉवी थी क्योंकि रात को जिस चुड़ैल ने उसका खून पिया था, वह अब मां का रूप धारण कर उसके सामने खड़ी थी! रात को जिस मुंह से भयानक आवाजें निकल रही थीं, अब उससे ममता भरे बोल फूट रहे थे!

लो यह फल खाओ!

नहीं! मैं नहीं खाऊंगा!

भीकाल के इंकार पर...

कुछ ही पलों बाद भीकाल के कंठ से निकलती चीखें मद्धम पड़ती चली गईं-

और चेतना पर हावी होता चला गया घना अंधकार-

सुबह के सूरज की किरणों ने वातावरण के साथ-साथ भीकाल के मस्तिष्क पर छाये अंधेरे को भी दूर किया-

शुभ प्रभात पुत्र! आशा है स्वयं को पहले से अच्छा अनुभव कर रहे होगे तुम!

...उस पर ममता उड़ेलती बोली वह बुढ़िया--

पुत्र होकर मां की बात टालता है! खा इसे चुपचाप! नहीं तो अभी एक चपत लगाऊंगी तुझे!

अवाक था भीकाल! हैरानी उस पर बुरी तरह हॉवी थी क्योंकि रात को जिस चुड़ैल ने उसका खून पिया था, वह अब मां का रूप धारण कर उसके सामने खड़ी थी! रात को जिस मुंह से भयानक आवाजें निकल रही थीं, अब उससे ममता भरे बोल फूट रहे थे!

लो यह फल खाओ!

नहीं! मैं नहीं खाऊंगा!

भीकाल के इंकार पर...

ममता भरी उस झिड़की ने भोकाल को मुंह खोलने के लिए विवश कर ही दिया-

शाबाश! अब खाओ इसे!

ना जाने उस बुढ़िया के चेहरे में कैसा खिंचाव था, ना जाने कैसी आभा थी उसकी आंखों में कि भोकाल का सारा क्रोध उफनते झाग की तरह शान्त होता चला गया-

लेकिन कहां शान्त हुआ था अभी उसके दिलो-दिमाग में उठता तूफान-

इस बुढ़िया के ममता भरे रूप को देखकर कोई सोच भी नहीं सकता कि यह रात को खौफनाक रूप धारण कर लेती है!

मेरी समझ में नहीं आ रहा कि मैं इसे मां कहूं या कहूं...

... चुड़ैल मां!

यह क्या है, मुझे यह जानने का प्रयत्न करना होगा!

मस्तिष्क में घुमड़ते प्रश्नों को अधरों पर ले आया भोकाल-

मैं आपके बारे में जानना चाहता हूं!

अभी वह समय नहीं आया कि मैं तुम्हें अपने बारे में कुछ बताऊं इसलिए...

...प्रतीक्षा करो!

!!

लड्डू का घूंट पीकर रह गया भोकाल-

ये बुढ़िया मुझे कुछ बताये या ना बताये लेकिन इतना तो मैं खुद भी समझ सकता हूं कि इसका उद्देश्य ठीक नहीं है।

...तिल-तिल करके मारना चाहती है वह मुझे और उसमें वह सफल भी हो जायेगी क्योंकि...

...ऐसी दशा में मैं कुछ भी नहीं कर सकता!

भोकाल की हालत उस ज्वालामुखी जैसी हो चुकी थी जो अन्दर ही अन्दर सुलग तो रहा था, लेकिन फटता नहीं था-

शारीरिक शक्ति उसे इंच भर भी अपने स्थान से हिलने नहीं दे रही थी और ममता से वशीभूत वह मुंह से विरोध कर नहीं सकता था-

शाबाश! पी जाओ सारा काढ़ा।

आहहऽऽऽऽ

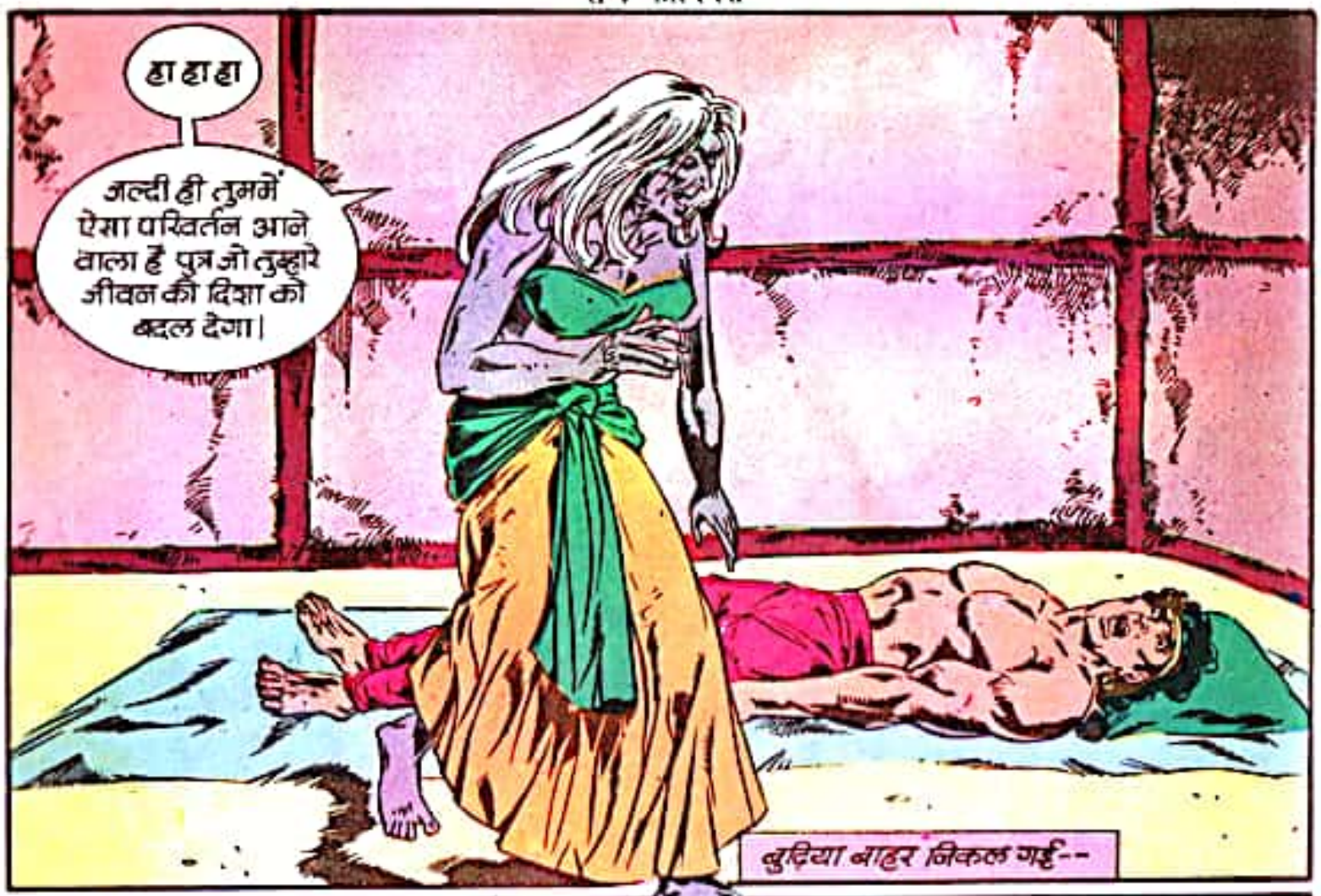
हा हा हा
जल्दी ही तुममें ऐसा परिवर्तन आने वाला है पुत्र जो तुम्हारे जीवन की दिशा को बदल देगा।
बुढ़िया बाहर निकल गई--

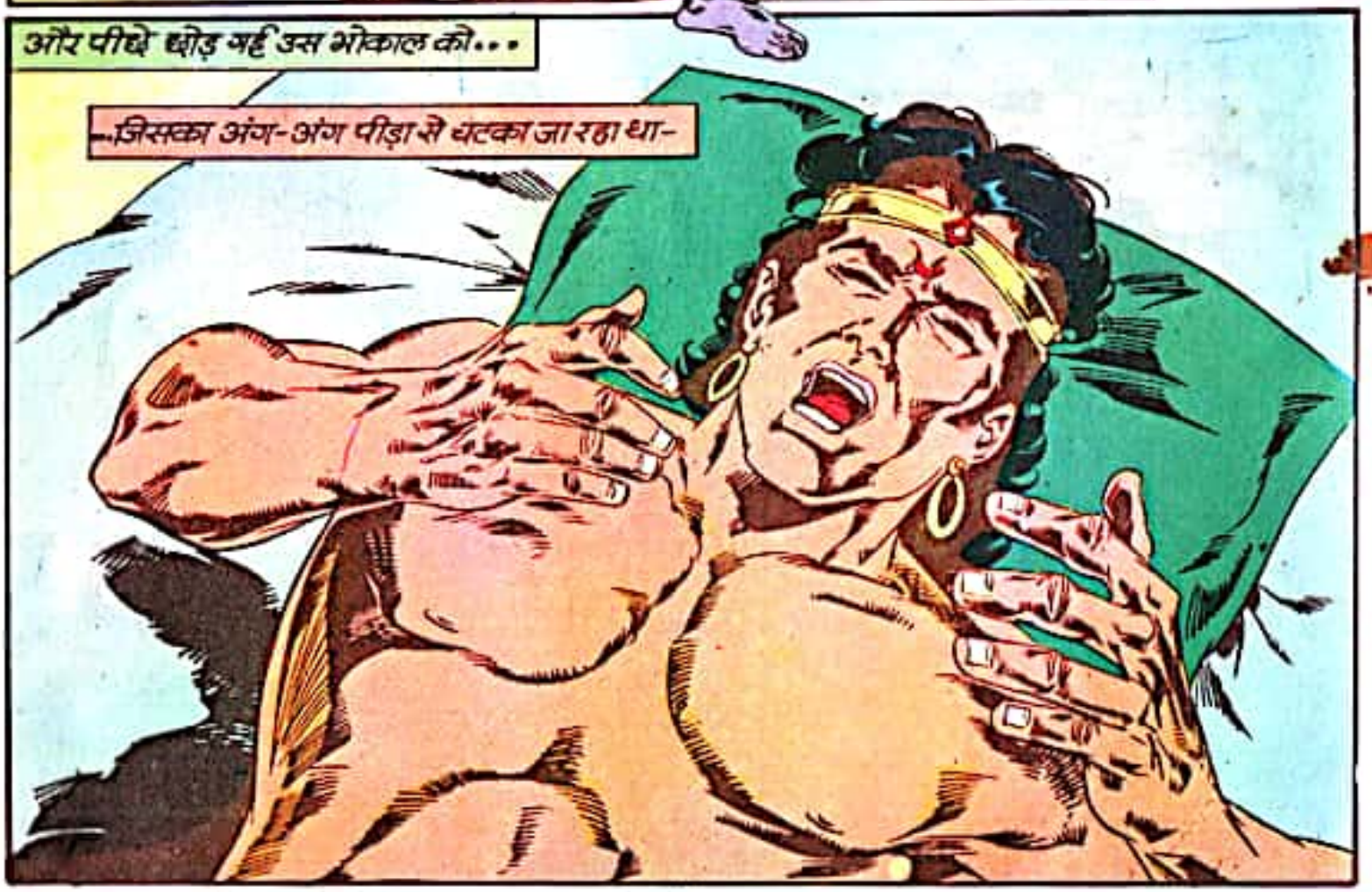
और पीछे छोड़ गई उस भोकाल को...
--जिसका अंग-अंग पीड़ा से चटका जा रहा था-

जो चीख रहा था-

तड़प रहा था-

जिसे इस बात की तनिक भी खबर ना थी कि आश्चर्यजनक ढंग से उसकी पीठ में दो दरारें पड़ रही थी-

और उसमें आ रहा था एक ऐसा परिवर्तन जो था-

अद्भुत-

आश्चर्यजनक

जल्द ही भोकाल को उस असहनीय पीड़ा से छुटकारा मिल गया-

लेकिन हावी हो गया वह भय-

वह वृद्धा कल भी मुझे काढ़ा पिलाकर चली गई थी और फिर कुछ देर बाद अपना शैतानी रूप धर कर मेरा लहू पीने के लिए वापस लौटी थी...

... क्या आज भी वापस लौटकर आयेगी वह!
निसंदेह...
... वापस तो मुझे आना ही था अगर ना आती तो फिर तुझे इस पीड़ा से मुक्ति कहां मिल पाती?
ही ही ही... अगर मैं तुझे छोड़ दूंगी तो कैसे पूरा होगा मेरा काम? ही ही ही...
नहीं! छोड दो मुझे।
छोड दो!
तेरी इस चमड़ी में बहुत पीड़ा उठ रही है। ला उसे दूर कर दूं।

कहानी 15वें पृष्ठ से आगे

यह सिलसिला भोकाल के साथ कई दिनों तक चलता रहा--

ना भोकाल उसे रोक पाया--

ना रोकने की उसमें ताकत थी--

काढ़े के साथ-साथ जहर के घूंट भी पीता रहा...

...भोकाल--

काढ़े का यह तुम्हारा अन्तिम प्याला है पुत्र! अब तुम्हें जीवन भर इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी!

सही कहा क्योंकि तेरे शिकंजे में फंसकर आज शायद मेरा जीवन समाप्त हो जाये। आह!

मैं अभी आती हूं।

मेरा लहू पीने के लिए आहह!

प्रतिदिन की भांति आज भी भोकाल के कंठ से दर्दनाक चीखें गूंजने लगीं--

लेकिन आज उसकी चीखों में शामिल हो गई थीं बाहर से आती चीखें भी--

आहह

हाहाहा

आईई

हाहाहा

बाहर से आती चीखों से लग रहा है कि आज उस चुड़ैल के साथ उसके साथी भी हैं।

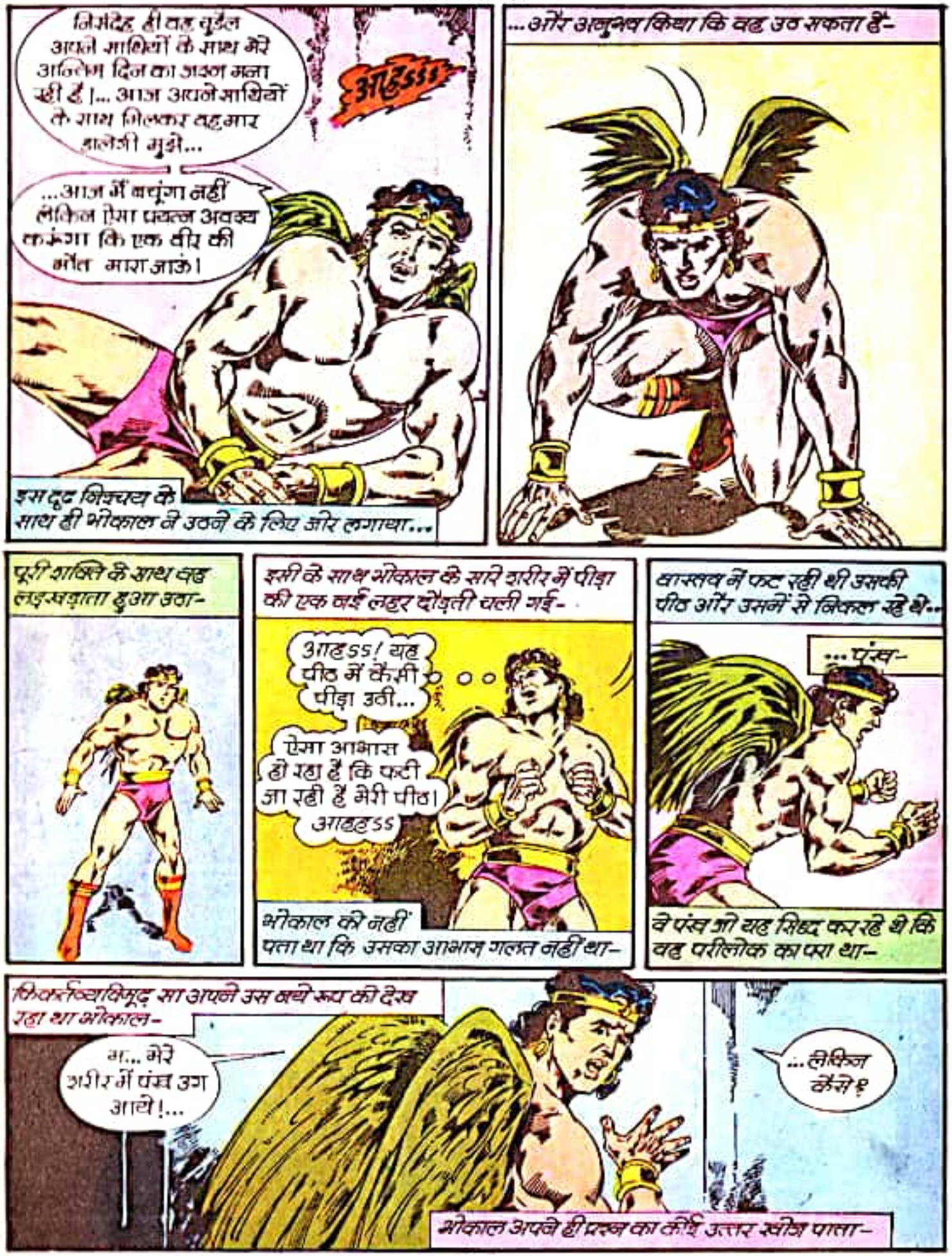
निःसंदेह ही वह चुड़ैल अपने साथियों के साथ मेरे अन्तिम दिन का जश्न मना रही है!... आज अपने साथियों के साथ मिलकर वह मार डालेगी मुझे...
आहsss
...आज मैं बचूंगा नहीं लेकिन ऐसा प्रयत्न अवश्य करूंगा कि एक चील की मौत मारा जाऊं।
इस दृढ़ निश्चय के साथ ही भोकाल ने उठने के लिए जोर लगाया...
...और अनुभव किया कि वह उठ सकता है-
पूरी शक्ति के साथ वह लड़खड़ाता हुआ उठा-
इसी के साथ भोकाल के सारे शरीर में पीड़ा की एक नई लहर दौड़ती चली गई-
आहsss! यह पीठ में कैसी पीड़ा उठी...
ऐसा आभास हो रहा है कि फटी जा रही है मेरी पीठ। आहsss
भोकाल को नहीं पता था कि उसका आभास गलत नहीं था-
वास्तव में फट रही थी उसकी पीठ और उसमें से निकल रहे थे..
...पंख-
वे पंख जो यह सिद्ध कर रहे थे कि वह परलोक का परा था-
किंकर्तव्यविमूढ़ सा अपने उस नये रूप को देख रहा था भोकाल-
या... मेरे शरीर में पंख उग आये!...
...लेकिन कैसे?
भोकाल अपने ही प्रश्न का कोई उत्तर खोज पाता-

उसने पहली बार बाहर से आयी कोई पुकार सुनी उसका बदन इस बार मैदान आसमानी तरंग जीत लिया-

ताकत उस चुड़ैल और उसके साथियों की शैतानी लीला आगे भी जारी है। अब वो उस समस्त ताकतों के लिए बने पंखों के सहारे आसमानों में बाहर आ जाएगा...

धड़

पहाड़ा हाथ में लेकर जी भोकल के पंख लहराकर उड़ता भागा तो-

ओह! पंखों के सहारे मुझे उड़ा दूं मैं... परन्तु अब मुझे इनका आवश्यकता नहीं रहा है...

अब मुझे यहीं रहकर अपने आने का संकेत देना होगा।

पंखों के सहारे लगभग चलता हुआ भोकल पुलिया से बाहर पहुंचा-

और अचानक आसमान में कुछ अजीब सी हलचल हो रही...

यहां शैतान लीला अब यहां नहीं है लेकिन उसकी यह मुद्रा समाप्त नहीं हुई है। यह तो अनन्त का सिलसिला ही रहेगा...

और मैं ऐसा होना नहीं देना चाहता इसलिए...

...यहां उस पुलिया पर अत्याचार का अन्त कर देने इसको मां कहां था-

... उन अत्याचारियों को प्रहारा की मदद से रोकना होगा ।

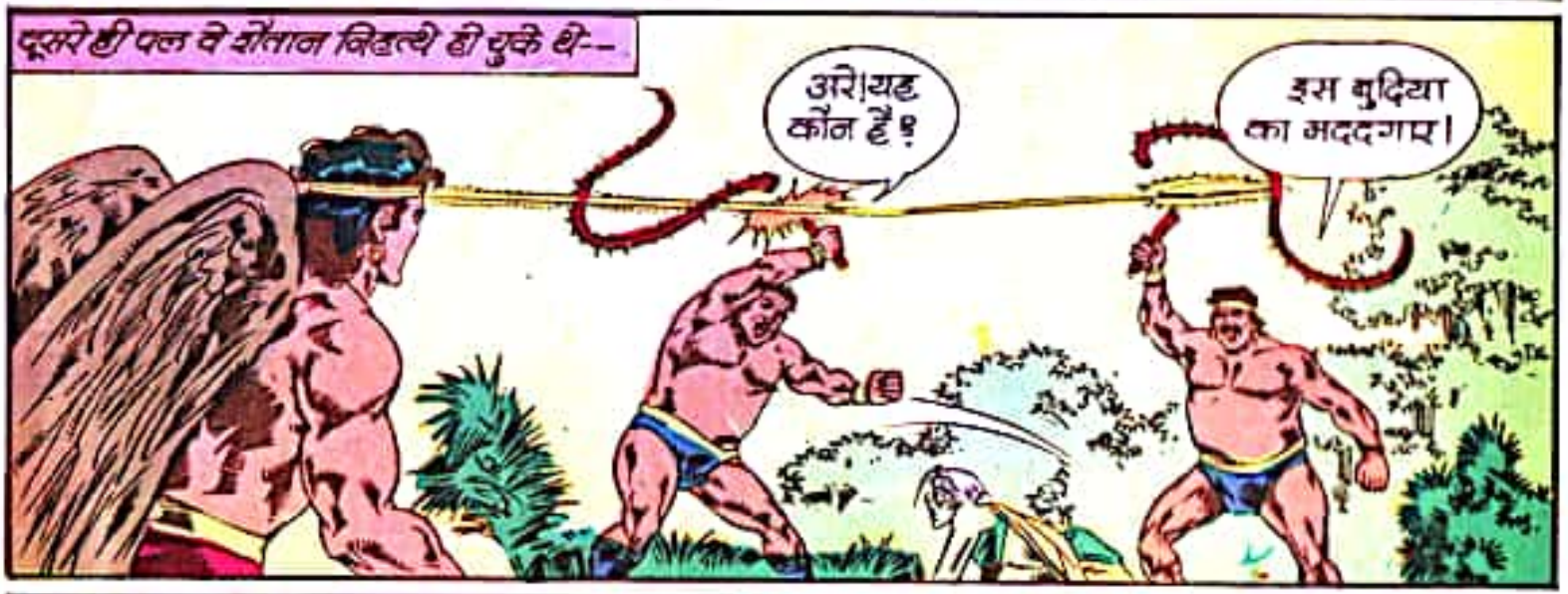
दूसरे ही पल वे शैतान भिड़ने ही वाले थे--
अरे! यह कौन है ?
इस बुढ़िया का मददगार!

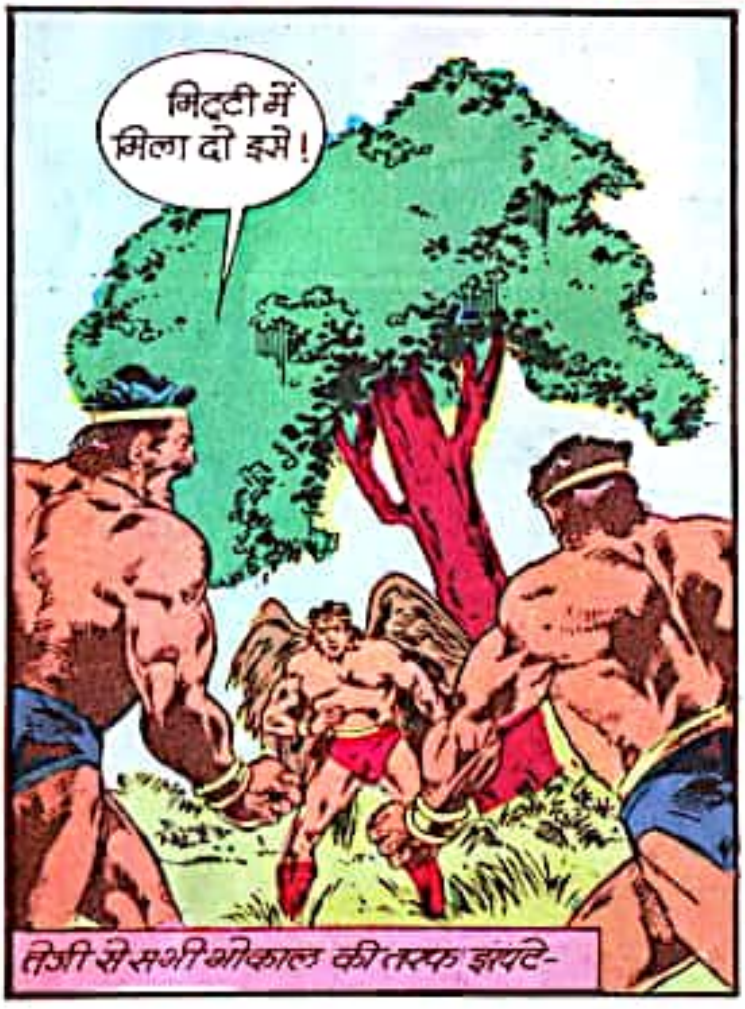
मिट्टी में मिला दो इसे!
तेजी से सभी ओकाल की तरफ झपटे-

लेकिन उस महाचोद्दा तक एक भी नहीं पहुंच पाया-
क्योंकि ओकाल ने उन्हें उनके मृत्युदेवता के पास पहुंचा दिया-
अपने प्रतिद्वंद्वी को अपने से कम आंकने वाले सदा ऐसे ही असमय काल के गाल में जाते हैं।

अब मुझे उस वृद्धा से अपने प्रश्नों के उत्तर पाने हैं।

अपने उत्तर बाद में पाना पहले मेरे हाथों से मेरे साथियों को मृत्यु देने का दण्ड तो पाले।

विभीषक अपने शत्रु को चेतावनी देकर ही मारता है ताकि उसे मृत्यु के पश्चात इस बात का दुख ना हो कि उसे छल से मारा गया!

कौन है यह विकराल शरीर और अद्भुत शक्ति का धारक ?

कभी-कभी शत्रु को चेतावनी देना...

... भारी भी पड़ जाता है शैतान!

वाह! तू भी किरणों का खिलाड़ी है तेरे साथ लड़ने और...

... तुझे समाप्त करने में...

...बड़ा आनन्द आयेगा।

आहहह

उस गोल तरंगों में फंसकर तड़प उठा भोकाल-

और फिर तेजी से कठोर धरातल की तरफ लहरा उठा-

उफ! नीचे गिरना मेरे घायल शरीर के लिए अत्यंत घातक सिद्ध होगा इसलिए...

मुझे अपनी रक्षा के लिए करना चाहिए यह प्रबंध!

स्वयं को बचाने में सफल हुआ था भोकाल--

लेकिन अभी कहां टला था उस पर मंडराता संकट-

तेरा कोई भी प्रयास आज तुझे मृत्यु से नहीं बचा पायेगा!

इस अस्त्र का एक ही वार मुझे पाताल में पहुंचा देगा...

...अगर मैंने स्वयं को नहीं बचाया तो

दनाक

मैं समझ गया अब तक तेरे मस्तक पर वह अस्त्र मौजूद है मैं तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता...

...इसलिए सबसे पहले तेरे उस अस्त्र को ही तेरे मस्तक से हटाने का प्रबंध करता हूं।

एकदम अप्रत्याशित था विभीषक का वह आक्रमण-

जिसने भोकाल को कई हाथ ऊपर उछाल दिया-

इसी के साथ अपने उद्देश्य में सफल हो गया विभीषक -

भोकाल के मस्तक से प्रहरा गिर चुका था--

जिसे विभीषक ने हवा में ही एक तरफ उछाल दिया-

अब यह अस्त्र तेरे मस्तक पर नहीं है। अब मैं देखता हूं कि तुझे...

...इस भयानक मृत्यु से कौन बचाता है।

ओह!

भोकाल ने उस साक्षात मौत के दूत से बचने की कोशिश की-

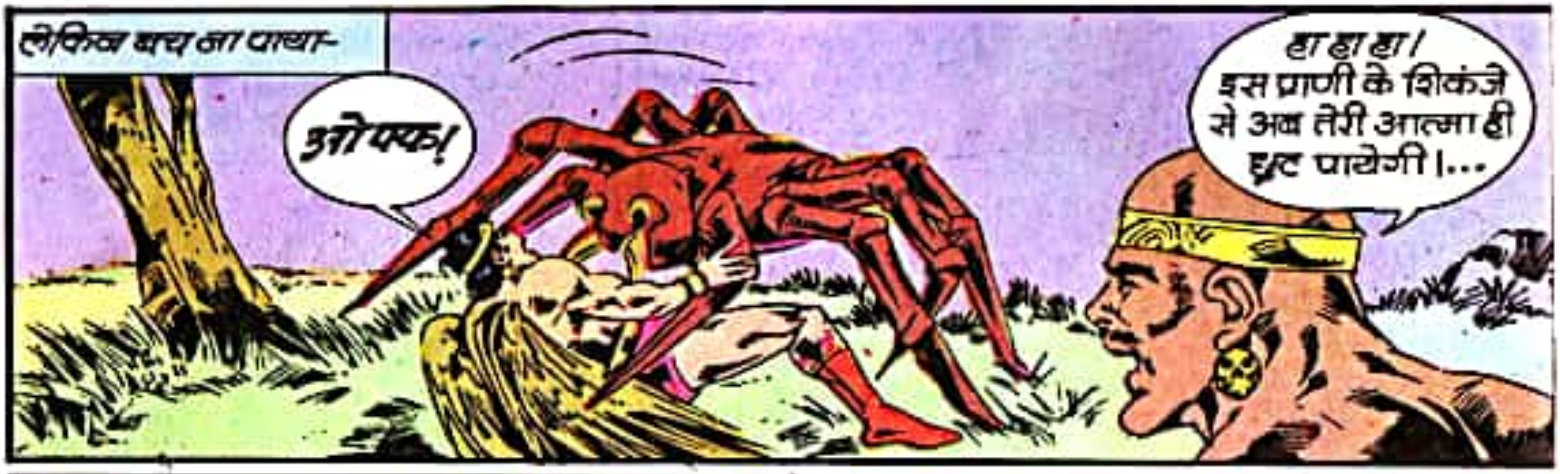
लेकिन बच ना पाया-
ओफ्फ!
हा हा हा! इस प्राणी के शिकंजे से अब तेरी आत्मा ही छूट पायेगी।...

...जीते जी तो तू इससे छूटने से रहा!
हा हा हा!
आहह! उसका कहना सही है। इस प्राणी के शिकंजे का कसाव पल प्रतिपल बढ़ता ही जा रहा है।
मेरी हड्डियां टूटने जा रही हैं।... मेरा दम घुटने लगा है।

लेकिन जान की बाजी लगा देने वाले, ताकत बाजुओं में उफान घूमने वाले ऐसे कहां मरते हैं। वे जूझते हैं, कोशिश करते हैं।
मुझे इस स्थिति से किसी भी दशा में निकलना ही होगा।
हा हा हा! मरेगा कुछ ही पलों में अब तू मरेगा।
नहीं मरेगा।

...क्योंकि अपने पुत्र और पति की तरह मैं इसे नहीं मरने दूंगी!
लो पुत्र! सम्भालो अपना यह अस्त्र!
हतप्रभ भोकाल को बुढ़िया द्वारा उछाला प्रहारा लपका-

और तुरन्त ही अपने सिर पर रख लिया-
अब इस प्राणी की खैर नहीं!

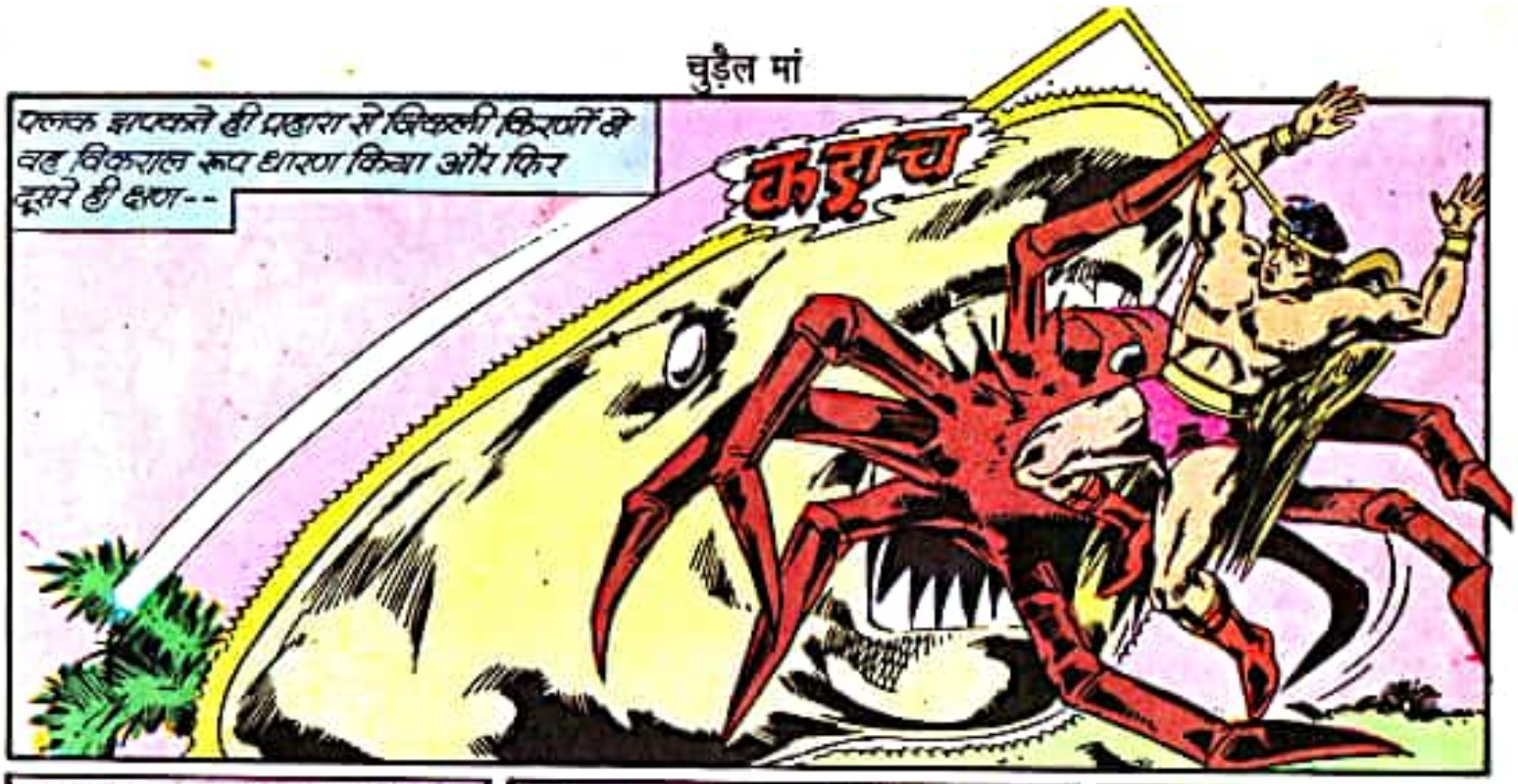
पलक झपकते ही प्रहार से निकली किरणों के वह विकराल रूप धारण किया और फिर दूसरे ही क्षण--
कड़ाच

अब तक स्तब्ध खड़ा विभीषक मानो नींद से जागा-
वह मुक्त हो गया है। अब मुझे तुम्हें ही उसे मृत्यु के दूसरे शिकंजे में फंसाना होगा।

लेकिन अब देर हो चुकी थी-
भोकाल के क्रोध और प्रहार के वार का शिकार पहले उसकी अदभुत अंगूठी वाला हाथ हुआ-
क्रच्च

...और फिर उसकी गर्दन-
आहह
क्रच्च
अपने शत्रु को समाप्त करके...

...भोकाल ने लपककर कुरी तरह घायल बुढ़िया को सम्भाला-
आप पर आक्रमण करने वाले ये शैतान कौन थे?
बहुत दिनों से मैं तुम्हारे प्रश्नों को टालती आ रही हूं पुत्र! परन्तु आज वो समय आ गया है...
... आज तुम्हें अपने हर प्रश्न का उत्तर मिलेगा...

"विश्वम्भरा धाम है मेरा / अपने पति ऋषि अखिलानन्द और पुत्र अखिलेश के साथ तीर्थयात्रा पर निकली थी मैं / हम एक दिव्य संयोग से इधर आ निकले / यहां के नयनाभिराम वातावरण और शान्ति ने हम सबका मन मोह लिया तथा हमने सदा के लिए यहीं रहने का निर्णय ले लिया!!"

"...यह क्षेत्र पृथ्वी का सबसे पवित्र क्षेत्र है!"

"...क्योंकि स्वर्ग से पृथ्वी पर पधारने वाले देवतागण सबसे पहले यहीं की भूमि पर अपने चरण रखते हैं!"

"हम यह जानकर गद्‌गद हो उठे / संयोग से हमें देवताओं की सेवा करने का अवसर मिला था—"

"हम भला उसे कैसे छोड़ देते?—

"हम तीनों सदा वहां पहुंचने वाले देवताओं की सेवा में तत्पर खड़े रहते—"

"जिससे प्रसन्न होकर देवता गण वापस लौटते समय हमें कोई वर या कोई उपहार अवश्य दे जाया करते थे—"

"हम देवताओं के उपहारों को सहर्ष स्वीकार करते, लेकिन हम यह सोचकर भी अचंभित थे कि देवतागण हमें उपहार में दिव्यास्त्र ही क्यों दे रहे हैं—".

"वह पक्ष एक दिन जब हमने भगवान शंकर के सामने रखा तो वे मुस्करा कर बोले--"

पृथ्वी पर पाप का एक बहुत बड़ा अवतार अवतरित होने वाला है। यह उसी को समाप्त करने की तैयारी है।

पाप का वह अवतार इन दिव्यास्त्रों को पाने का प्रयत्न कर सकता है, इसलिए जब तक ये दिव्यास्त्र सही हाथों में ना पहुंच जायें तब तक तुम्हें इन्हें अपने प्राणों से अधिक सम्भाल कर रखना है।

इतना कहकर भोलेनाथ अंतर्धान हो गये--

इन दिव्यास्त्रों की सुरक्षा के लिए चिंतित हो उठे--

दिव्यास्त्रों को कहां सुरक्षित रखा जाये स्वामी?

मैं इस घाटी के ऐसे बहुत से स्थानों को जानता हूं जहां दिव्यास्त्र सुरक्षित रहेंगे।

दिव्यास्त्रों को अलग-अलग स्थानों पर रख दिया गया--

और हम निश्चित होकर खेले लगे। परन्तु हमारी वह निश्चिंतता समाप्त हो गई अमावस्या की एक रात को--

पाप के उस अवतार के कई साथी दिव्यास्त्र की खोज में आ पहुंचे थे--

उन्होंने हमें बंदी बना लिया। और मृत्यु का भय दिखाकर दिव्यास्त्रों का पता पूछना चाहा--

अपने काफी प्रयासों के पश्चात भी वे जब सफल नहीं हो पाये तो दरिन्दगी पर उतर आये वे शैतान--

सच्च

आहह

नहीऽऽऽ

सच्च

मेरी आंखों के सामने ही उन्होंने मेरे पति और पुत्र की हत्या कर दी...

...और मुझे तड़पता छोड़कर चले गये--

जब तक तुमसे दिव्यास्त्रों का पता नहीं जान लेते तब तक हम हर अमावस्या की रात को आकर तुम्हें यातनाएं देते रहेंगे!...

...अंततः दिव्यास्त्रों का पता तुम्हें बताना ही होगा।

अपने पति और पुत्र की हत्या के पश्चात मैं भी मर जाना चाहती थी, परन्तु मैं ऐसा न कर सकी क्योंकि मुझे दिव्यास्त्रों को किन्हीं सही हाथों में पहुंचाना था।

और ये रही हाथ तुम्हारे हैं महाबली भोकाल और यह बात मैं उस समय ही समझ गई थी जब मैंने तुम्हें मरणासन्न अवस्था में देखा। तब मैंने तुम्हें नया जीवन देने का निर्णय कर लिया और उसके लिए तुम्हें पिलाना आरम्भ किया वैद्यराज धन्वन्तरि का भेंट दिया जीवनदायिनी काढ़ा...

...जिसे मेरी पति ने एक अत्यन्त दुर्गम स्थान पर रखा हुआ था। परन्तु मैं हर कठिनाइयों को पार करके वहां जाती और पूरी तरह लहूलुहान होने के बाद तुम्हारे लिये जीवनदायिनी काढ़ा लेकर लौटती--

आप मेरे लिए हजारों कष्ट सहती रहीं और मैं आपको चुड़ैल समझता रहा!

उसमें तुम्हारा कोई कुसूर नहीं था पुत्र! जीवन-दायिनी काढ़ा पीने के बाद मनुष्य के मस्तिष्क में बसी शंकाएँ उसके सामने आ खड़ी होती हैं।

जिस समय मैं तुम्हें काढ़ा पिलाने के बाद तुम्हारे जख्मों पर औषधि का लेप करने के लिए वापस आती थी तो काढ़े के प्रभाव में तुम मुझे चुड़ैल समझते थे!

इसी के साथ भोकाल के आंसुओं पर लगा बांध टूट गया।

मुझे क्षमा कर दो मां! मैं भूल गया था कि मां कभी चुड़ैल नहीं हो सकती। मां सिर्फ मां होती है।

भूल जा उसे पुत्र और दिव्यास्त्रों का पता जानकर उन्हें प्राप्त करने में जुट जा...

लेकिन अपनी इस मां की एक बात सदा याद रखना। हर दिव्यास्त्र का एक निश्चित लक्ष्य होता है। उसी लक्ष्य को भेदने के लिए ही वे पृथ्वी पर आते हैं। ऐसा न हो कि तू उन्हें पाकर समय से पहले गंवाने की भूल कर बैठे और लक्ष्य चूक जाये।

नहीं मां, नहीं! आपका यह पुत्र आपको वचन देता है कि ऐसा नहीं होगा। प्रत्येक दिव्यास्त्र सिर्फ और सिर्फ उसके लक्ष्य के लिए ही प्रयुक्त होगा।

भोकाल के इन शब्दों के समाप्त होने के साथ ही-

...बुढ़िया की सांसें भी समाप्त हो गईं-

एक बार फिर खो दी मैंने...

मां!

उसके शरीर से लिपटकर दहाड़े मारकर रो पड़ा भोकाल-

समाप्त